रामबाड़ा के बस निशां ही बाकी

गढ़वाल कमिश्नर ने किया सेना के हेलीकाप्टर से हवाई सर्वेक्षण

अमर उजाला ब्यूरो

देहरादून। रविवार रात बादल फटने से मची तबाही के बाद मंगलवार को तकरीबन साफ हो गया कि अब रामबाड़ा का नामोनिशां भी नहीं बचा है।

गढ़वाल के कमिश्नर सुवर्द्धन ने सेना के बड़े हेलीकाप्टर एमआई 17 से इस क्षेत्र के दो चक्कर लगाए। दोनों ही बार रामबाड़ा की जगह सिर्फ मलबा दिखाई दिया। आयुक्त का कहना है कि हेलीकाप्टर बड़ा होने की वजह से वहां उतर नहीं सका। अब बुधवार को छोटे हेलीकाप्टर से जाकर मौके पर उतरने की कोशिश की जाएगी। इस क्षेत्र में कितने लोग काल का ग्रास बन गए हैं और कितने अब भी जिंदगी-मौत से जूझ रहे हैं, इस बारे में कोई पुख्ता जानकारी नहीं है। अलबत्ता कमिश्नर ने इतना भर कहा कि मरने वालों की संख्या 200 तक हो सकती है। स्थानीय लोग इनकी संख्या और ज्यादा बता रहे हैं। कमिश्नर के मुताबिक हवाई निरीक्षण में केदारनाथ मंदिर में भी मलबा दिखाई दिया है। लग रहा है कि इस मंदिर को भी नुकसान पहुंचा है। कुछ लोग मंदिर क्षेत्र में दिखाई भी दिए।देर शाम सचिवालय में पत्रकारों से वार्ता में मुख्य सचिव सुभाष कुमार, आयुक्त सुवर्द्धन, आपदा प्रबंधन सचिव भास्करानंद यही कह सके की हालात बेहद खराब हैं। इन अफसरों ने साफ लफ्जों में तो नहीं कहा। हां, इतना माना कि ऐरियल व्यू (हवाई निरीक्षण) में रामबाड़ा की जगह बस मलबा ही दिख रहा है। मुख्य सचिव के मुताबिक केदारनाथ और गौरीकुंड के बीच के रास्ते में करीब 800 लोगों के फंसे होने का अनुमान है। यह संख्या ज्यादा भी हो सकती है, क्योंकि गौरीकुंड से केदारनाथ जाने वाले यात्रियों की कोई गिनती नही होती।

गौरीकुंड-केदारनाथ पैदल मार्ग पर बाढ़ के बाद रामबाड़ा का मंजर।

डीजीपी सत्यव्रत बंसल के मुताबिक पीएसी के करीब 15 जवानों के बारे में सूचना नहीं मिल पा रही है। इसमें महिला कांस्टेबल भी हैं। इसी तरह रामबाड़ा की ओर बढ़ रहे आरआरबी के करीब 15 जवान पानी आने किसी तरह से ऊंचे स्थान पर पहुंचने में जरूर सफल रहे।

केदारनाथ से 850 लोगों को निकाला

पिथौरागढ़ के तेजम में 30 लोगों के हताहत होने की आशंका

- गोविंदघाट से तीन हजार यात्रियों को निकाला
- 30 महिलाओं और बच्चों को शांति कुंज भेजा

देहरादून। मौसम कुछ अनुकूल होते ही मंगलवार को राहत और बचाव कार्य में तेजी आई। केदारनाथ क्षेत्र से करीब 850 लोगों को हेलीकॉप्टरों के जरिए गुप्तकाशी पहुंचाया जा सका। कुछ भोजन के पैकेट भी केदारनाथ और आसपास के इलाके में गिराए हैं।

मुख्य सचिव के मुताबिक केदारनाथ से निकाल कर गुप्तकाशी पहुंचाए गए यात्रियों में से 30 महिलाओं और बच्चों को देर शाम जौलीग्रांट लाया गया था। बाद में सभी को हरिद्वार में शांतिकुंज भेजा गया है। बचाव कार्य में कुल 10 हेलीकाप्टर लगे हैं। अस्थायी व्यवस्था होने पर गोविंदघाट से करीब 3000 लोगों को निकालकर जोशीमठ पहुंचाया जा सका है। हेमकुंड मेंकोई भी यात्री नहीं फंसा है। उत्तरकाशी नालूपानी में भी हजारों लोग फंसे हैं। इन्हें सेना की मदद से रसद और अन्य सामग्री पहुंचाई गई है। धरासू बैंड के कारण उत्तरकाशी का सड़क मार्ग खोलने में अभी तीन दिन का और समय लग सकता है। मंगलवार को देवप्रयाग तक मार्ग खोल दिया गया है। रुद्रप्रयाग तक कनेक्टिविटी बनाने में अभी दो दिन का और समय लगेगा। इसी तरह कुमाऊं मंडल के जिला पिथौरागढ़ में मुनस्यारी के पास तेजम नामक स्थान पर भूस्खलन के मलबे में दब कर करीब तीस लोगों के हताहत होने की आशंका है। कुमाऊं के कमिश्नर को भी एक हेलीकाप्टर भेजा गया है। इसी के सहारे राहत और बचाव कार्य में चल रहा है। **ब्यूरो**

गोविंदघाट में पिनोला के पास करीब 20 मीटर तक बहा बदरीनाथ हाईवे।